सच कहूं तो पहले मैं अकेली थी, पर जागोरी से जुड़कर मैं 'हम' हो गई हूं।

मेरा नाम मीरा है, मैं जे.जे. कॉलोनी, मदनपुर खादर, सरिता विहार में रहती हूं। मैं अभी ओपन स्कूल से 12वीं कक्षा में पढ़ रही हूं। मैं जागोरी में अपने साथ ससुराल वालों द्वारा घरेलू हिंसा व दहेज उत्पीड़न मामले में सहयोग के लिए जुड़ी थी। मुझे जागोरी के बारे में ''आज़ाद फ़ाउंडेशन'' से पता चला था। आज़ाद में भी जागोरी की ओर से हमारी कुछ क्लास हुई थीं। मैंने इन कक्षाओं में जेंडर भेदभाव, पितृसत्ता के बारे में समझा कि इनका हम औरतों की ज़िंदगी पर कितना बुरा असर पड़ता है। अक्तूबर 2009 से मैं कभी–कभी शुक्रवार की मीटिंग में जुड़ती थी। फिर मैं 21.12.12 से लगातार हर मीटिंग में जुड़ने लगी। स्वैच्छिक समूह की मीटिंगों में भी सभी प्रशिक्षणों में मैंने भाग लिया।

मेरे जीवन का सबसे यादगार दिन वह था– जब हम विज़िट पर दिशा सहारनपुर संगठन में भी गए, पहली बार मैं अपने माता–पिता व परिवार से अलग, अकेले कहीं गई थी। हम सब महिलाओं का एक समूह के रूप में इतनी आज़ादी और निडरता के साथ घूमना, काम करना और खुलकर मौज–मस्ती करना मेरे लिए सबसे अनूठा अनुभव था।दिशा में हमने महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा के मामलों में उनके द्वारा किए जाने वाले हस्तक्षेप और सहयोग तथा उनके द्वारा चलाई जाने वाली नारी अदालतों के बारे में जाना। दिशा संगठन में हमने वहां पहली बार नारी अदालत देखी थी। हमने गांवों में जाकर दिशा के अलग–अलग कामों और ग्रामीण स्तर पर उनके कार्य अनुभवों को समझा और यह भी समझा कि कठिनतम हालात में कैसे अपनी रणनीतियों से विजय हासिल कर सकते हैं।

अक्तूबर 2014 से जागोरी के फैलो के रूप में काम किया। मैंने अलग–अलग संस्थाओं में भी काम किया है, पर यह कहने में मुझे कोई शंका नहीं कि मुझे जागोरी जैसा काम का माहौल कहीं न मिला। यहां सबका अपने साथियों के लिए परवाह करना, गलत बात पर खुलकर डांटना और समझाना, जैसे सभी अपने हैं, इसीलिए मैं किसी न किसी रूप में जागोरी से जुड़े रहना और सीखना चाहती हूं। जागोरी से जुड़कर मैंने अपनी कमियों और कमज़ोरियों को समझा और जाना, अपनी क्षमताओं को पहचाना। यहां थियेटर ग्रुप से जुड़कर थियेटर के बारे में जाना और समझा। अपने भीतर की झिझक और शर्म से ऊपर उठकर जीवन और समाज की समस्याओं पर आवाज़ उठाना सीखा। एन.जी.ओ. नेटवर्क की मीटिंगों में मैंने विभिन्न समस्याओं के राजनैतिक और सामाजिक पक्षों को समझा और जाना कि उनके विषय में किस प्रकार रणनीतिक तरीके से आवाज़ उठाई जा सकती है।

आज मैं जब पीछे मुड़कर देखती हूं तो अपनी पहली छवि पर खुद ही हैरान हो जाती हूं। माता–पिता ने पाला–पोसा और शादी करके अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। ससुराल वालों ने मुझे एक दासी की तरह रखना चाहा। किसी ने भी मेरे मन की, भावनाओं की परवाह नहीं की कि मैं क्या चाहती हूं, लेकिन आज़ाद और जागोरी से जुड़कर मैंने जीवन में अपने व्यक्तित्व और

सफरनामा

महत्व का जाना। पहले मैं घर से निकलने में झिझकती थी, पर जागोरी से जुड़ने के बाद मुझे कानून व अपने अधिकारों के बारे में पता चला। अब मैं कहीं भी आ–जा सकती हूं। किसी से भी खुलकर बात कर सकती हूं। मुझमें हर गलत बात के खिलाफ़ आवाज़ उठाने की हिम्मत आई है। अब मैं किसी भी गली में आ–जा सकती हूं, मुझे किसी से डर नहीं लगता। मैंने जाना कि जीवन में आत्मसम्मान से जीना क्या होता है।

मगर मैं इस सवाल का जवाब आज तक समझने कर कोशिश कर रही हूं कि हम जब अपने आत्मसम्मान के लिए लड़ते हैं तो सब हमारे खिलाफ़ क्यों हो जाते हैं? वो भी वो लोग जो हमारे अपने होते हैं? जब कभी मन ऐसे सवालों से बोझिल होता है तो मैं पुनः जागोरी और उसकी समुदाय मीटिंगों में जुड़कर चर्चा में शामिल होती हूं, क्योंकि यहां भीतर के सवालों को जैसे थाह मिलने लगती है। यहां मैंने जाना कि मैं जो चाहती हूं, जो सोचती हूं वो गलत नहीं है, बल्कि गलत वो लोग हैं जो मुझे गलत ठहराते हैं और दबाने की कोशिश करते हैं।

मैंने जागोरी की इन मीटिंगों में समुदाय की विभिन्न समस्याओं और जन शक्ति की ताकत को जाना है कि हम अपनी सामूहिक ताकत से बड़ी से बड़ी समस्या को सुलझा सकते हैं। मैंने नारीवाद और नारीवादी सोच को जाना कि हमें समाज के साथ अपने हक़ और बराबरी की अभी भी बहुत लंबी लड़ाई लड़नी है, लेकिन शांति से, समाज की सोच में बदलाव लाकर पितृसत्त.त्मक शोषण को दूर भगाना है। मैंने जागोरी से जो भी सीखा उसे अपने जीवन और आसपास के माहौल में बदलाव के लिए इस्तेमाल करती हूं। जागोरी के साथ अपने जुड़ाव और साथ को मैं सीखने और बदलने की यात्रा के रूप में परिभाषित कर सकती हूं।

मगर इस यात्रा में भी अनेक चुनौतियां रही हैं और आगे भी बहुत सी चुनौतियां आएंगी। मगर जानती हूं कि जागोरी का साथ इन चुनौतियों को जीतने में भी मददगार होगा। यहां मैंने सामा.जिक सुधार में संस्थागत हस्तक्षेप के विभिन्न पक्षों को समझा है। मैंने जाना है कि कोई कुछ भी कहे पर एन.जी.ओ. समाज और समुदाय में बदलाव के लिए जो भी काम करते हैं, जो भी सोच फैलाते हैं वह बेमाने नहीं हैं और इसीलिए मैं इस संस्था के साथ अपने जुड़ाव को कभी भी टूटने नहीं दूंगी। महिलाओं के साथ रिश्ता बनाना, उनमें भी यही जुड़ाव और सहयोग भावना पैदा करना एक बड़ी चुनौती है, पर मैं समझने लगी हूं कि समूह की ताकत इस चुनौती को भी पार किया जा सकता है।